[This question paper contains 16 printed pages]

Your Roll No. : .....

Sl. No. of Q. Paper : **6689** **G-II**

Unique Paper Code : A-135

Name of the Course : **B.A. (Prog) Course**

Name of the Paper : Hindi-A

Semester/Annual Mode : Annual Mode

Time : 3 Hours ***Maximum Marks : 100***

(Write your Roll No. at the top immediately on the receipt of this question paper)

नोट- **सभी** प्रश्न अनिवार्य है।

1. निम्नलिखित अनुच्छेद आपके पाठ्यक्रम में निर्धारित पाठों में से लिए गए हैं। किन्हीं **दो** अनुच्छेदों के नीचे दिए गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए। 15, 15

(क) संस्कृत कूप-जल मात्र नहीं । उसकी भूमिका विस्तृत और विशाल है। वह भाषा-नदी को जल से सनाथ करने वाला पावस मेघ है, वह परम पद का तुहिन

P.T.O.

बोध है, वह हिमालय के हृदय का 'ग्लेशियर' अर्थात् हिमवाह है। जब हिमवाह गलता है तभी बहते नीर वाली नदी में जीवन-संचार होता है। जब उत्तर दिशा में तुषार पड़ती है तो वही राशिभूत होकर हिमवाह का रूप धारण करती है। जब हिमवाह पिघलता है तो नदी जीवन पाती है, अन्यथा उसका रूपांतर मृतशय्या में हो जाता है। हिमालय दूर है, हिमवाह नजरों से ओझल है, पर जानने वाले जानते हैं कि यह तृषातोषक अमृत-वारि, जो गाँव-नगर की प्यास बुझाता हुआ सागर-संगम तक जा रहा है, हिमालय का पिघला हुआ हृदय ही है। यदि यह हृदय-कपाट बद्ध या अवरुद्ध हो जाए तो नदी बेमौत मारी जाएगी।

(i) उपर्युक्त अनुच्छेद के पाठ और लेखक का नाम लिखिए।

(ii) लेखक ने संस्कृत भाषा को किन भावुक विशेषणों से सम्बोधित किया है ?

(iii) "जब हिमवाह पिघलता है तो नदी जीवन पाती है, अन्यथा उसका रूपांतर मृतशय्या में हो जाता है।" इस पंक्ति का आशय स्पष्ट कीजिए।

(iv) भाषा को "बहते नीर वाली नदी" क्यों कहा गया है ?

(v) विलोम शब्द लिखिए : विस्तृत, सनाथ, जीवन, अमृत।

(ख) आज हर क्षेत्र में इसी कारण नैतिक अनिश्चितता और असंयम और अनुशासनहीनता पैदा हुई है कि पुरानी नैतिक व्यवस्था ध्वस्त हो चुकी है और नई व्यवस्था की संरचना अभी हुई नहीं है। मिसाल के तौर पर, धर्म और ईश्वर का भय तो मिट चुका है,

लेकिन राज्य और कानून का भय उसकी जगह नहीं ले पाया है। न अपनी आत्मा या अन्तःकरण का अंकुश ही व्यक्ति या समुदाय दोनों के संदर्भ में सामाजिक नियंत्रण की शक्ति बन सका है। राजनीति के नैतिक मूल्यों से कट जाने और महज सत्ता की होड़ का माध्यम बन जाने से भी समस्याएँ पैदा हुई हैं। जनतांत्रिक समान बिना आस्था और नैतिकता के सभ्य और सुस्थिर समाज नहीं बना रह सकता, यही नए समाज की समस्या है।

(i) उपर्युक्त अनुच्छेद के पाठ और लेखक का नाम लिखिए।

(ii) 'नए समाज में नैतिक मूल्यों का संकट' विषय पर एक टिप्पणी लिखिए।

(iii) ''अपनी आत्मा या अन्तःकरण का अंकुश'' वाक्यांश का आशय स्पष्ट कीजिए।

(iv) सभ्य और सुस्थिर समाज के निर्माण के लिए क्या आवश्यक है ?

(v) विलोम शब्द लिखिए : नैतिक, आस्था, सामाजिक, शक्ति।

(ग) क्यों नारी को नारी का शत्रु मानने का ही इतना गला-फाड़ प्रचार होता है, जबकि कसौटी महायुद्ध हों, या कि अदालती मुकदमेबाजी या फिर (हर देश के) साहित्य में पिता-पुत्र-सम्बन्धों की अभिव्यक्ति, जितनी तल्ख-कड़वी और मारक टकराहटें। वहाँ हमें अनादिकाल से पुरुषों के बीच में होती दिखती है, और किसी के बीच नहीं। फिर दो मनुष्यों के बीच का टकराव

जितना उनके व्यक्तित्व पर निर्भर नहीं करता, उतना करता है उनकी स्थिति पर। जेलों के कैदियों के बीच, जंजीर से बंधे पालतू कुत्तों के बीच, मालिक के अनुशासन तले पशुवत् जीवन बिताते बधुँवा मजूरों के बीच भी परस्पर तीखी घृणा तथा हिंसा का प्रदर्शन आम है। उनके द्वेष दूसरे के प्रति आक्रोश से नहीं, खुद अपने प्रति, अपनी पराश्रयी हीन स्थिति के प्रति एक उत्कट आत्मघृणा से उपजते हैं। पराधीन जो भी होगा उसे चूंकि सपनेहुँ सुख नहीं मिलेगा, अतः वह दूसरे को भी सुख क्यों देना चाहेगा ? नारी को नारी से अलग करने-भर से परिवारों में हिंसा और घृणा की प्रवृत्तियाँ नहीं मिटी हैं। मिटी हैं तो स्त्रियों की पराधीनता घटाने से।

(i) उपर्युक्त अनुच्छेद के पाठ और लेखक का नाम लिखिए।

(ii) लेखिका ने पुरुष-वर्ग की आपसी टकराहटों के क्या उदाहरण दिए हैं ?

(iii) "दो मनुष्यों के बीच का टकराव जितना उनके व्यक्तित्व पर निर्भर नहीं करता, उतना करता है उनकी स्थिति पर।" इस पंक्ति का आशय स्पष्ट कीजिए।

(iv) परिवारों में घृणा और हिंसा की प्रवृत्तियाँ कैसे मिट सकती हैं ?

(v) विलोम शब्द लिखिए : शत्रु, घृणा, हिंसा, पराधीन।

2. निम्नलिखित अनुच्छेद का विश्लेषण करते हुए इसके नीचे दिए गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए।

जातीयता की कोई निश्चित व्याख्या नहीं है। 'पहचान' के कोई स्थिर आधार नहीं हैं। जातीय समूहों के सीमांत समय-समय पर बदलते रहते हैं। वे कभी एक तत्व को वरीयता देते हैं, कभी दूसरे को। प्रजाति, धर्म, भाषा और

संस्कृति की भूमिका कभी मुख्य रही है, कभी गौण। आज प्रश्न सामाजिक समता और सांस्कृतिक स्वायत्तता का है। अपने ऐतिहासिक विकास की प्रक्रिया में कुछ समूह शेष समाज से पूरी तरह समाकलित नहीं हो पाए। युद्ध में जय-पराजय ने पहचान-समूहों का विभाजन किया। उपनिवेशवाद जातीयता और संस्कृति के तर्क पर आधारित नहीं था। साम्राज्यवाद की समाप्ति के बाद नवनिर्मित राष्ट्रों ने भी इन तथ्यों की उपेक्षा की। स्वाधीनता के उत्सवीकरण के अति-उत्साही अध्याय के बाद बहुमत के उच्च भाव और अल्पमत के आर्थिक शोषण और सामाजिक विभेद के प्रश्न उभरे। जहाँ उनकी उपेक्षा या अवज्ञा की गई, छोटी अस्मिताओं में तीव्र प्रतिक्रिया हुई। आंदोलनों ने हिंसक रूप ग्रहण किया।

(i) इस अनुच्छेद का केन्द्रीय विचार क्या है ? 2

(ii) ''आज प्रश्न सामाजिक और सांस्कृतिक स्वायत्तता का है।'' इस कथन का आशय स्पष्ट कीजिए। 4

(iii) जातीयता की कोई निश्चित व्याख्या क्यों नहीं है? 4

3. किन्हीं **पांच** प्रश्नों के उत्तर लिखिए। 3×5=15

(i) ''किसी जाति की संस्कृति उसके शरीर का वस्त्र न होकर उसकी आत्मा का रस है, इसी से न हम उसे बलात् छीन सकते हैं और न चीर-फाड़कर फेंक सकते हैं।'' इस कथन का आशय स्पष्ट कीजिए।

(समाज और व्यक्ति)

(ii) जैविक और रासायनिक अस्त्रों को कारण बताते हुए किस देश पर चढ़ाई की गई ? (शक्ति का केन्द्रीकरण)

(iii) ''बाजार एक ओर एकाधिकार को तोड़ता है तो दूसरी ओर असमान समाज और उसके वैषम्य को भी बढ़ावा देता है।'' अपने विचार प्रकट कीजिए।

(बदलता भारतीय समाज : बहुआयामी दृष्टि)

(iv) फ्रॉयड ने चुटकुलों के विषय में क्या मत प्रकट किया है ? (हँसो, हँसो, जल्दी हँसो)

(v) लेखक ने सरस्वती नदी के विषय में क्या भाव व्यक्त किए हैं ? (भाषा बहता नीर)

(vi) दुलारी की किन्हीं दो चारित्रिक विशेषताओं का वर्णन कीजिए। (गुण्डा)

(vii) जातीयता के किन्हीं दो तत्वों का वर्णन कीजिए।

(अस्मिताओं का संघर्ष)

(viii) साम्प्रदायिक दंगों के बाद भिवंडी नगर का कैसा दृश्य था ? ('आज के अतीत' से)

4. 'सूरज का सातवां घोड़ा'' के आधार पर किन्हीं **पांच** प्रश्नों के उत्तर दीजिए। 3×5=15

(i) जमुना के संतान न होने पर रामधन ने उसे कौन-सी युक्ति बताई?

(ii) तन्ना के जीवन की अच्छाइयों का वर्णन कीजिए।

(iii) सत्ती चमन ठाकुर के यहाँ क्या काम करती थी ?

(iv) माणिक मुल्ला के अनुसार प्रेम आर्थिक विषमता से किस प्रकार प्रभावित होता है ?

(v) माणिक को जुमना के हाथ की बनी कौन-सी चीज सबसे अधिक पसंद थी ?

(vi) तन्ना का विवाह जमुना के साथ क्यों नहीं हुआ ?

(vii) माणिक मुल्ला का सत्ती से परिचय कैसे हुआ ?

अथवा

'यात्राएँ' के आधार पर किन्हीं **पांच** प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

(i) सिगरी उनसत एक बहुत ही कर्मठ महिला थीं। कैसे ?

(ii) "अन्यायपूर्ण परम्पराओं के विरुद्ध वह न्याय के लिए किए गए संघर्ष का एक अनोखा आदर्श है।" रॉबिनहुड के संदर्भ में स्पष्ट कीजिए।

(iii) कोहिमा के निवासियों की क्या विशेषता हैं ?

(iv) केरल के आदिवासियों पर केन्द्रित क्रांतिकारी उपन्यास 'आग्नेयम्' के लेखक कौन हैं ?

(v) गौतम बुद्ध की मूर्ति का नाम ''माथा कुँवर' क्यों पड़ गया था?

(vi) प्राचीन मंदिरों का तीर्थ किसे कहा गया है ?

(vii) 'जंगली बतख' नाटक किस साहित्यकार की रचना है ?

(viii)''उत्तरांचल की दिल्ली' किस शहर को कहा जाता है ?

5. किसी **एक** विषय पर विस्तृत टिप्पणी लिखिए। 10

(i) युवाओं में बढ़ती नशे की लत ;

(ii) स्त्री-मुक्त : एक खोखला नारा ;

(iii) मेरा प्रिय लेखक।

6. नीचे दिए गए संवादों को कहानी में रूपांतरित कीजिए : 6

रेवती : ये लोग कौन हैं ? जान-पहचान के तो मालूम नहीं पड़ते।

विश्वनाथ : न जाने कौन हैं ?

रेवती : पूछ लो न !

विश्वनाथ : क्या पूछूँ। दो-तीन बार पूछा, ठीक-ठीक उत्तर ही नहीं देते।

रेवती : मेरा तो दर्द के मारे सिर फटा जा रहा है। इधर पिछली शिकायत फिर बढ़ती जा रही है। पहले रोते-रोते हाथ पैर सुन्न हो जाते थे, अब बैठे-ही-बैठे हो जाते हैं।

विश्वनाथ : क्या बताऊँ, जीवन में तुम्हें कोई सुख न दे सका। नौकर भी नहीं टिकता है।

रेवती : पानी जो तीन मंजिल पर चढ़ाना पड़ता है, इसलिए भाग जाता है। गरमी क्या कम है! किसी को क्या जरूरत पड़ी है जो गरमी में भुने। यह तो हमारा ही भाग्य है कि चने की तरह भाड़ में भुनते हैं।

विश्वनाथ : क्या किया जाए ?

रेवती : फिर, क्या खाना बनाना होगा ? पर ये हैं कौन?

विश्वनाथ : खाना तो बनाना ही पडेगा। कोई भी हो, जब आए हैं तो खाना जरूर खाएँगे, थोडा-सा बना लो।

रेवती (तुनककर) : खाना तो खिलाना ही होगा- तुम भी खूब हो। भला इस तरह कैसे काम चलेगा ? दर्द के मारे तो सिर फटा जा रहा है; फिर खाना बनाना इनके लिए और इस समय ? आखिर ये आए कहाँ से हैं ?

विश्वनाथ : कहते हैं, बिजनौर से आए हैं।

रेवती : बड़ी मुश्किल है। मैं खाना नहीं बनाऊँगी। पहले आत्मा, फिर परमात्मा, जब शरीर ही ठीक नहीं रहता तो फिर और क्या करूँ ?

7. (क) 'कोश' की परिभाषा देते हुए द्विभाषी शब्दकोश की विशेषताएं बताइए। 5

(ख) निम्नलिखित शब्दों को वर्णक्रमानुसार लिखिए। 5

इच्छा, साहित्यिक, मंदाकिनी, प्रमाणित, क्षेत्र, शक्ति, रंगमंच, विचार।

अथवा

निम्नलिखित पारिभाषित शब्दों में से किन्हीं **दो** का अर्थ स्पष्ट कीजिए।

पर्यावरण, अर्थव्यवस्था, हरित क्रांति, यथार्थवाद।

8. किन्हीं **चार** वाक्यों का पदक्रम ठीक कीजिए। 4

(i) हँसना-हँसाना सिर्फ जानती नहीं जाति एक जीवंत।

(ii) हास्य-व्यंग्य निश्चय ही सहनीय कठिनाइयों को बनाता है।

(iii) अस्मिताएँ छोटी हैं चाहती कि जाए सुनी उनकी भी आवाज।

(iv) छूट रहे थे फुहारे रक्त के घावों से उसके।

(v) करता है प्रोत्साहित व्यंग्य अमानवीयता को एक तरह की।

(vi) हूँ करता सभी को मैं नमस्कार सादर।

(vii) है उज्जवल बहुत भविष्य पीढ़ी का युवा।

(viii) सभ्य और बनाती है सुसंस्कृत शिक्षा हमें।